3.10708.: स समिद्धे महत्य् अग्नौ शरीरम् उपतापयन्·

c. उप praef. सम् *id.* MAH. 2.856.: मनः समुपतप्यते·

c. निस् (mutato स् in ष् et त् in ट्) exurere, comburere. MAH. 1.8215.: दग्धैकदेशा बह्वो निष्टप्तास् तथा ऽपरे·

c. परि urere, torrere. MAH. 1.4784.: सूर्येण स ह धर्मात्मा पर्यतप्यत भारत· — *Transl. Pass.* dolore affici, dolere, moerere. MAH. 1.1747.: पर्यतप्यत तत् पापङ् कृत्वा; 8441.: यदर्थम् परितप्यसे· — *Act. id.* R. Schl. II.66.7.: रामं विवासितं सभार्यञ् जनको श्रुत्वा परितप्स्यत्य् अहम् इव· — *Caus.* dolore afficere. HIT. 103.8.: कं स्वीकृता न विषयाः परितापयन्ति·

c. प्र 1) urere, comburere, exurere. BH. 11.30.: जगत् समग्रम् भासस् तवो ऽग्राः प्रतपन्ति; MAH. 3.13086.: षड्भिर् अन्यैश्च सहितो भास्करः प्रतपिष्यति· 2) dolere, moerere. R. Schl. II. 12.1.: चिन्ताम् अभिसमापेदे मुहूर्तम् प्रतताप च· — *Caus.* calefacere, urere. SU. 1. 10.: तयोस् तपःप्रभावेन दीर्घकालम् प्रतापितः। धूमम् प्रमुमुचे विन्ध्यः·

c. सम् 1) urere. R. Schl. II. 85.17.: वनदाहाग्निसन्तप्तम् पादपम्; IN. 5.44.: हृच्छयेन सन्तप्तः· 2) *Pass.* dolore affici, moerere. SA. 5.83.: दिवा ऽपि मयि निष्क्रान्ते सन्तप्येते गुरू मम· — *Cl.* 4. *A.* se castigare, corpus sum vexare. MAH. 1.4639.: शतशृङ्गे महाराज तापसः समतप्यत· — *Caus.* 1) urere. R. Schl. II. 85. 17.: अन्तर्दाहेन दहनः सन्तापयति राघवम्· *Transl.* vexare, dolore afficere. HIT. 103. 7.: सन्तापयन्ति कम् अपथ्यभुजन् न रोगाः· 3) collustrare, illuminare. MAH. 3.11970.: ततः सन्तापिता लोका मत्प्रसूतेन तेजसा·

तप (r. तप् s. अ) urens, vexans, *in comp. cum* पर, *v.* परन्तप qui hostem vexat.

तपस् *n.* (r. तप् s. अस्) 1) calor, fervor. LASS. 5.7.: ग्रीष्मे पञ्चतपा भूत्वा· 2) fervidum anni tempus. 3) nomen mensis. 4) corporis cruciatus; castimonia, devotio. IN. 5.43. N. 24.20. BHAG. 4.10.28. (Lat. *tempus*, v. r. तप्.)

तपस्य् *Denomin.* (a praec. s. य्, gr. 585.) se ipsum castigare, corpus suum vexare. M. 5. BH. 9.27.

तपस्य *Adj.* (a praec. s. अ, nisi a तपस् s. य) qui corpus suum vexat, qui vitam austeram, tormentuosam, castam agit. BH. 18.67.

तपस्विन् *Adj.* (a praec. s. विन्) *i. q. praec.* SU. 3.5. BH. 6.45. 7.9.

तपोधन (*BAH.* e तपस् et धन divitiae) castigationis, castimoniae, devotionis dives. SU. 2.15.

तम् 4. *P.* ताम्यामि dolore affici, moerere, languescere, tabescere, confici. R. Schl. II. 52.25.: ताम्यति शोकेन; 106.31.: भरतेन ताम्यता· — *Caus.* तमयामि vexare; MAH. Ros. पुनर् युद्धाय सञ्जग्मुस् तमयन्तः परस्परम्· (Fortasse lat. *tabeo* huc pertinet, mutatâ nasali in mediam ejusdem organi, sicut in gr. *βροτός*, in lith. *dewyni* novem; russ. *tomlju* fatigo, vexo.)

c. आ *i. q. simpl.* R. Schl. II. 63.50. in *ATM.* तस्य त्वा आताम्यमानस्य तं वाणम् अहम् उद्धरम्·

c. नि *Part. pass.* नितान्त multus, immodicus, immoderatus. RAGH. 3.8 et 35. 14.43. UR. 24.4. 74.8. RITU-S. 1.5.

c. प्र *i. q. simpl.* R. Schl. II. 12.105.: प्रताम्य वा प्रज्वल वा प्रणश्य वा·

c. सम् *id.* GITA-GOV. 4.21.: चिन्तासु सन्ताम्यति·

तमस् *n.* (r. तम् s. अस्) caligo, obscuritas, tenebrae. SA. 5.76. (Lith. *tamsà* caligo, *tamsùs* obscurus; russ. *temnyĭ* obscurus, *temno-ta* caligo; hib. *teim* «dark, obscure», *teimhen* «darkness», *teimheal* «an eclipse, darkness»; germ. vet. *demar* crepusculum, mutato *s* in *r*, nisi *demar* pertinet ad तमिस्र; sax. vet. *thim* obscurus, attenuato *a* in *i*; anglo-sax. *dim* id.; lat. *tenebrae* ad तमिस्र vel तिमिर trahi posset, ita ut ortum sit e *tembrae*, inserto *b* euphonico, sicut in gr. *μεσημβρία*, *ἀμβροσία*; cf. Pott. 1.260.

तमस्विनी *f.* (a praec. s. विन् in *fem.*) nox. AM.

तमिस्र *n.* (a तमस् s. र attenuato penultimo अ in इ) *i. q.* तमस्· AM.